जे.डी.ई.ई./एफ–16/2025

जीका विषाणु रोग

मुकेश भट्ट, अजय कुमार यादव, कौशल किशोर रजक,
संचय कुमार विश्वास, गौरव शर्मा, एवं रूपसी तिवारी

भा.कृ.अनु.प.- भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर–243122 (उ०प्र०) भारत

जीका विषाणु रोग

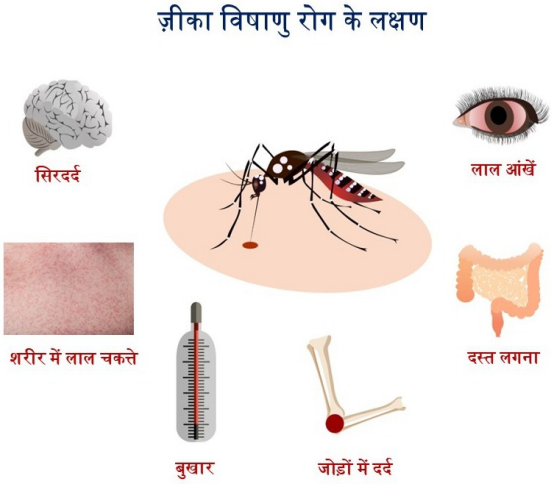

जीका विषाणु रोग एक विषाणु जनित रोग है जो कि विषाणु संक्रमित मच्छर के काटने से फैलता है। इससे संक्रमित व्यक्ति में थकान, जोड़ों में दर्द एवँ बुखार जैसे लक्षण दिखाई देते हैं । हालाँकि अधिकांश लोगों में गंभीर लक्षण पैदा नहीं होते हैं, परन्तु यदि कोई गर्भवती महिला इस विषाणु से संक्रमित हो जाती है तो उसमें भ्रूण सम्बन्धी विकारों का खतरा बढ़ जाता है । इस विषाणु से बचाव के लिए अभी तक कोई वैक्सीन या कारगर दवा उपलब्ध नहीं है, जिसके कारण जीका विषाणु एक वैश्विक खतरा बना हुआ है।

जीका विषाणु रोग का कारक

जीका विषाणु रोग का कारक एक RNA विषाणु है, जो कि फ्लेविविरिडी फैमिली से सम्बंधित है । इस विषाणु फैमिली से सम्बंधित अन्य विषाणुओं में डेंगू विषाणु और येलो फीवर विषाणु मुख्य हैं । जीका विषाणु की खोज सबसे पहले सन्न 1947 में यूगांडा के जंगलों में बंदरों में हुयी । तत्पश्चात, सन् 1952 में इसे पहली बार तंजानिया और यूगांडा में इंसानों में पाया गया। सन् 2007 में, इस विषाणु का पहला बड़ा प्रकोप माइक्रोनेशिया में हुआ, जहाँ हजारों की संख्या में लोग संक्रमित हुए । 2015–2016 में ब्राजील में जीका विषाणु के मामलों में अचानक वृद्धि हुई, जहाँ गर्भवती महिलाओं में गंभीर भ्रूण विकार देखे गए । इस दौरान, विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने जीका विषाणु को एक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित किया ।

भारत में जीका विषाणु का प्रकोप

भारत में पहली बार जीका विषाणु के मामले सन् 2016 में गुजरात और तमिलनाडु में पाए गए। तत्पश्चात, सन् 2018 में राजस्थान में 150 के लगभग लोगों में जीका विषाणु की पुष्टि की गयी। साथ ही उस क्षेत्र से सम्बन्धित मच्छरों में भी जीका विषाणु का संक्रमण पाया गया। हाल ही में, स्वास्थ्य विभाग के द्वारा जारी की गयी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस वर्ष सन् 2024 में भी महाराष्ट्र में जीका विषाणु के मामले पाए गए हैं ।

जीका विषाणु का प्रसारण एवं संक्रमण चक्र

एडीज प्रजाति के मच्छर, जीका विषाणु के फैलने का सबसे महत्त्वपूर्ण साधन है । जब यह मच्छर एक संक्रमित व्यक्ति को काटता है तो जीका विषाणु मच्छर के शरीर में चला जाता है और जैसे ही यह संक्रमित मच्छर किसी दूसरे स्वस्थ मनुष्य को काटता है तो उसे भी विषाणु से संक्रमित कर देता है ।

इसके अलावा जीका विषाणु संक्रमित गर्भवती महिला से भ्रूण को, संक्रमित व्यक्ति के साथ यौन संबंध बनाने से अथवा रक्त–दान से भी फैल सकता है।

इंसानों में जीका विषाणु रोग के लक्षण

जीका विषाणु संक्रमण के लक्षण आमतौर पर संक्रमण के 2 से 7 दिनों के भीतर दिखना शुरू हो जाते हैं । ये लक्षण लगभग डेंगू के लक्षणों जैसे ही होते हैं यद्यपि इनकी गंभीरता डेंगू से कम होती है। इनमें थकान एवँ कमजोरी महसूस होना, सिरदर्द, जोड़ों और मांसपेशियों में दर्द, बुखार, आंखों में दर्द या लाली और शरीर पर लाल चकत्ते बनना शामिल है।

जीका विषाणु रोग का संक्रमण चक्र

अधिकांश लोग बिना किसी गंभीर समस्या के ठीक हो जाते हैं। कुछ मामलों में संक्रमित व्यक्ति में Guillain & Barré syndrome जैसे लक्षण दिखाई देते हैं जिसमें संक्रमित व्यक्ति की मांसपेशियों में कमजोरी या पक्षघात (लकवा) जैसे लक्षण उत्पन्न होते हैं, जो कि समय के साथ ठीक हो जाते हैं ।

गर्भवती महिलाओं में इस रोग के गंभीर लक्षण दिखाई देते हैं। जिन गर्भवती महिलाओं को जीका विषाणु का संक्रमण हो जाता है, वे भ्रूण को संक्रमण पहुंचा सकती हैं। इससे विषाणु द्वारा भ्रूर्ण में माइक्रोसेफली का जोखिम बढ़ जाता है । यह एक जन्म दोष है जो कि मस्तिष्क के विकास को प्रभावित करता है । इस जन्म दोष के साथ पैदा हुए शिशुओं के दिमाग और सिर छोटे आकार के होते हैं। इसके अतिरिक्त, गर्भवती महिलाओं में जीका विषाणु का संक्रमण; गर्भपात, समय से पहले प्रसव या मृत शिशु के पैदा होने का कारण भी हो सकता है। जो शिशु दिखने में सामान्य होते भी हैं, उनमें भी अक्सर देखने या सुनने आदि की क्षमता में कमी देखी जाती है ।

जानवरों में जीका विषाणु के प्रभाव

जानवरों में जीका विषाणु के प्रभावों के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है, और यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है कि यह किस तरह से उन्हें प्रभावित करता है। कुछ अध्ययन बताते हैं कि मच्छरों के जरिए जानवरों को भी यह विषाणु संक्रमित कर सकता है। कुत्तों, बिल्लियों और अन्य घरेलू जानवरों पर इसके असर की ज्यादा जानकारी नहीं है, लेकिन यह माना जाता है कि जानवरों में जीका विषाणु के गंभीर प्रभाव मनुष्य से अपेक्षाकृत कम हो सकते हैं। हालाँकि जानवरों में जीका विषाणु की पुष्टि होना इस बात का संकेत है कि संक्रमित जानवर, इस विषाणु के फैलने में अहम भूमिका निभा सकते हैं ।

जीका विषाणु संक्रमण का निदान

- जीका विषाणु संक्रमण की पहचान इसके लक्षणों और संक्रमित व्यक्ति की जीका विषाणु संक्रमित क्षेत्र सम्बंधित यात्रा के आधार पर की जा सकती है। इसके अतिरिक्त नैदानिक

पुष्टिकरण के लिए, खून या मूत्र में PCR या Rapid Test के माध्यम से भी जीका विषाणु की जाँच की जा सकती है।

- लक्षण दिखने के 5 से 6 दिन के बाद, जब शरीर में प्रतिरोधक क्षमता उतपन्न हो चुकी होती है, उस समय ELISA टेस्ट का माध्यम से भी जीका विषाणु की जाँच की जा सकती है।
- जीका संक्रमित क्षेत्रों में गर्भवती महिलाओं को अल्ट्रासाउंड के द्वारा समय समय पर भ्रूण में मस्तिष्क सम्बन्धी विकारों की जांच करवाने की सलाह दी जाती है ।

प्रबंधन एवं उपचार

जीका विषाणु के इलाज के लिए कोई वैक्सीन या विशिष्ट दवा उपलब्ध नहीं है। लक्षणों को कम करने के लिए मरीज को आराम करने और डीहाइड्रेशन से बचने के लिए खूब सारे तरल पदार्थों का सेवन करने की सलाह दी जाती है । बुखार और दर्द को कम करने के लिए दवाईयों का प्रयोग किया जा सकता है ।

जीका विषाणु संक्रमण से बचाव

- जीका विषाणु को रोकने का सबसे अच्छा तरीका मच्छरों के काटने से बचना है ।
- एडीज मच्छर, सुबह और सायंकाल के दौरान सबसे अधिक सक्रिय होते हैं । इस समय ज्यादा सावधानी बरतें ।
- घर और आस-पास के क्षेत्रों में साफ-सफाई रखें । इससे मच्छर नहीं पनपेंगे ।
- मच्छरों के काटने से बचने के लिए शरीर को ढक कर रखें या कीट विकर्षक लेप का प्रयोग करें ।
- बिस्तर में मच्छरदानी का प्रयोग करें, जिससे मच्छरों से बचा जा सके ।
- अगर घर पर कोई जीका विषाणु से संक्रमित है, तो उसे मच्छरदानी वाले बिस्तर में रखें ।
- जीका विषाणु से बचाव के लिए अपनी इम्यूनिटी को बढ़ाये। खुद को हाइड्रेटेड रखें । इसके लिए जूस और नारियल पानी इत्यादि का सेवन करें ।
- असुरक्षित यौन संबंध बनाने से बचें और गर्भवती महिलाएं जीका विषाणु संक्रमित क्षेत्रों का भ्रमण करने से परहेज करें ।

इन सब उपायों के द्वारा जीका विषाणु से बचा जा सकता है ।

संरक्षक एवं निर्देशन	:	**डॉ. रूपसी तिवारी**, संयुक्त निदेशक, प्रसार शिक्षा
सम्पादक	:	**डॉ. अखिलेश कुमार**, वरिष्ठ वैज्ञानिक, औषधि विभाग
		डॉ. रूपसी तिवारी, संयुक्त निदेशक, प्रसार शिक्षा
प्रकाशक	:	**डॉ. त्रिवेणी दत्त**, निदेशक एवं कुलपति
		भाकृअनुप- भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर
संस्करण	:	2025
मुद्रक	:	**बाइट्स एण्ड बाइट्स**, बरेली